Original Research Paper | Arts | Volume : 08 | Issue : 12 | Dec 2023 | e-ISSN : 2456-5040

वल्लभ संप्रदाय के घरानों का विश्लेषण

डॉ. मनीष डंगवाल

एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोपेश्वर, चमोली ,उत्तराखंड

ABSTRACT

वल्लभ सम्प्रदाय के विभिन्न घराने केवल धार्मिक संस्थाएँ नहीं हैं, बल्कि भारतीय संगीत, साहित्य और भक्ति संस्कृति के महत्वपूर्ण केंद्र हैं। इनकी हवेली संगीत परंपरा, अष्टछाप कवियों की रचनाएँ, राग–आधारित सेवा–पद्धति तथा गुरु–शिष्य परंपरा ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को एक विशिष्ट आध्यात्मिक और सांगीतिक आधार प्रदान किया। इनके तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि सभी घराने एक ही वैष्णव दर्शन से जुड़े हैं, फिर भी स्थानीय सांस्कृतिक प्रभावों के कारण उनकी संगीत–शैली और प्रस्तुति में विशिष्टता विकसित हुई है। आचार्य बल्लभ द्वारा स्थापित पुष्टिमार्ग संप्रदाय, सर्वप्रथम गोवर्धन के जतीपुरा से प्रारंभ हुआ। जहां श्रीनाथजी के, श्री विग्रह को स्थापित करके आचार्य श्री ने पुष्टि संप्रदाय की नींव रखी क्योंकि आचार्य वल्लभ की आज्ञानुसार सेव्य स्वरूपों की सेवा केवल आचार्य वंशजों को ही प्राप्त हो सकती थी, अतः वल्लभाचार्य जी के पुत्रों से होते हुए यह परंपरा गोस्वामी विट्ठल नाथ जी के पास पहुंची। तत्पश्चात उनके सात पुत्रों को सात सेव्य स्वरूपों के रूप में यह परंपरा हस्तांतरित हो गई।

यही सात सेव्य स्वरूपों से बने सात ग्रहध्घराने आज भी भक्ति कि उस अविरल धारा को बहा रहे हैं, जिसका आरंभ १५ वीं शताब्दी में आचार्य श्री वल्लभ द्वारा प्रारंभ हुआ था।

प्रस्तावना–

वल्लभ सम्प्रदाय में "घराना" शब्द का प्रयोग प्रायः **गद्दी या वंश–परंपरा** के अर्थ में होता है। गोस्वामी विट्ठलनाथ के वंशजों द्वारा स्थापित विभिन्न गद्दियों ने अपनी–अपनी सेवा–पद्धति, संगीत–शैली और सांस्कृतिक परंपराएँ विकसित कीं। अपनी मृत्यु का पूर्वानुमान होते ही आचार्य वल्लभ जी ने अपने सेवा स्वरूपों को अपने ज्येष्ठ पुत्र गोपीनाथ जी को दे दिया। इसके पश्चात उनके पुत्र पुरुषोत्तम जी को यह गद्दी प्राप्त हुई। यह दोनों ही अल्पायु में परलोक गमन कर गए। इसके पश्चात उनके काका ,वल्लभाचार्य जी के द्वितीय पुत्र श्गोस्वामी विट्ठल नाथ जीश आचार्य पद पर आसीन हुए, उनके 6 पुत्र और चार पुत्रियां हुई तथा एक पोषित पुत्र हुए। इस प्रकार अपने परलोक गमन से पूर्व विट्ठलनाथ जी ने अपने सात पुत्रों को सात सेव्यरूपों के साथ अपनी संपत्ति हस्तांतरित कर दी। यही से पुष्टि संप्रदाय के साथ घरानों का जन्म हुआ।

पुष्टिमार्ग स्थापनाः

इसकी स्थापना वल्लभाचार्य जी द्वारा, संवत् १५५०, श्रावण शुक्ल एकादशी के दिन, अपने प्रमुख सेवक 'दामोदर दास हरसानी' को, सर्वप्रथम मंत्र दीक्षा देकर करी गई। इस मार्ग में उन्होंने स्पष्ट किया कि, ब्रह्म निर्गुण, निर्विशेष है, जबकि जीव, अणु और सेवक है। पुष्टि संप्रदाय का दार्शनिक दृष्टिकोण 'जगत प्रपंच है परंतु सत्य भी है, परब्रह्म परमात्मा ही जगत के कारण है व गोलोंकाधिपति श्रीकृष्ण ही परब्रह्म है तथा जीव उनका दास है, वे साध्य व साधन दोनों है।'

ऐसी दर्शनिकता के साथ वल्लभाचार्य जी ने अद्वैतवाद के कोरे, शुष्क सिद्धांतों का खंडन किया। उनके अनुसार परमात्मा शुद्ध है तथा जीव उनका अंश होने के कारण से स्वयं भी शुद्ध है। इसी से इस मत का नाम शुद्धाशुद्ध भी पडा।

पुष्टिमार्गीय भक्ति पथ, जीव को माया रहित होकर अनन्य भाव से, आत्म समर्पण के द्वारा परमानंद प्राप्ति करवाता है। इस संप्रदाय का आधार ग्रंथ 'श्रीमद्भागवत महापुराण' है।

पुष्टि के प्रकार– १.शुद्ध पुष्टि, २. मिश्र पुष्टि

मिश्र पुष्टि के तीन प्रकार हैं– १.प्रवाह मिश्र, २.मर्यादा मिश्र, ३.पुष्टि मिश्र

शुद्ध पुष्टि के भक्त गोपी–गीतों को आधार करके उनका अनुसरण कर, विशुद्ध प्रेम से परमात्मा को प्राप्त होते हैं। वही, पुष्टिस्थ होकर भी लोकाचार में आसक्त रहना, प्रवाह मिश्र पुष्टि है।

मर्यादा मिश्र पुष्टिमार्गीय गुणज्ञ होते हैं, भगवत धर्म के ज्ञाता व अन्य देवी देवताओं के भी उपासक होते हैं।

अंत के पुष्टिमिश्र जीव भगवान के अच्छे अनुरागी और भगवान द्वारा अनुग्रहित होते हैं। एकमात्र प्रभु का संबंध ही इन्हें मान्य होता है। लोकाचार, भौतिक त्रय–ताप से सर्वथा भिन्न यह जीव, सदा–सदा पूर्ण रूपेण ईश्वर के आश्रित होते हैं।

पुष्टि सम्प्रदाय की मान्यताएं

यहां बिना गुरु के कृष्ण प्राप्ति संभव नहीं बताई गई है। गुरु केवल वल्लभाचार्य जी के ही वंशज हो सकते हैं। उन्हीं से दीक्षा का चलन इस संप्रदाय में है।

१.मंत्र दीक्षा क्रम– यहां प्रारंभिक दीक्षा अष्टाक्षर मंत्र, दूसरी पंचाक्षरी व तृतीय ८६ अक्षरों की, ब्रह्म संबंध मंत्र द्वारा, दीक्षा का प्रावधान

Copyright© 2023, IEASRJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

है। पंचाक्षरी मंत्र प्रत्येक वैष्णव दे सकते हैं, अष्टक्षरी मंत्र केवल ६ प्रकार के वैष्णव (१. गोस्वामी २. वल्लभवंशी पुत्रियां ३. वाराणसी सेठ पुरुषोत्तम ४. गुर्जर ब्राह्मण गोपालदास कृपण ५. पित्र व्योपाधि समलंकृत श्री हरिवंश ६.श्री गोपीनाथ जी के सेवी लालदास के ब्राह्मण अष्टम पीठ) दे सकते है।

२. कंठी वा तिलक अनिवार्यतः इस परंपरा की मान्यता है।

३. यहां दो प्रकार से सेवाओं की मान्यताएं हैं– १. मानसिक २. क्रियात्मक

मानसिक सेवा में साधक ध्यानस्त होकर, ईश्वर को ध्यान केंद्र बनाकर, मन में उनकी सेवा करता है। परंतु यह करना सर्वसाध्य नहीं है। उच्च कोटि के प्रेम भक्ति वाले साधक, जो 'पुष्ट मिश्र पुष्टि' कोटि के भक्त होते हैं, वहीं इस सेवा को कर सकते हैं। क्योंकि इसको तभी पूर्ण माना जाएगा, जब कि साधक पूर्ण रूप से मन को एकचित्त करके सेवा में लगाए। परंतु मन का किंचित भी विचलन संपूर्ण साधना को नष्ट–भ्रष्ट कर देगा।

दूसरे प्रकार की सेवा में भक्त प्रकट रूप में श्री स्वरूप की अर्चना, वंदना, पूजा, भोग आदि कार्य करता है, जिसे क्रियात्मक सेवा कहते हैं। इसे साक्षात रूप सेवा भी कहते हैं।

इस सेवा के दो प्रकार हैं– १. नित्य सेवाध्अष्टयाम सेवा २. वार्षिकोत्सव सेवा।

नित्य सेवा में ८ चरण होते हैं– १. मंगला २.श्रृंगार ३.ग्वाल ४.राजभोग ५.थापन ६.भोग ७.संध्या ८.आरती और ९.शयन

वल्लभाचार्य जी रू संक्षिप्त जीवन परिचय

श्री वल्लभाचार्य जी का जन्म १५३४ विक्रम संवत (सन् १४७८) वैशाख कृष्ण एकादशी को रविवार के दिन चंपारण में हुआ। इनके पिता श्री लक्ष्मण भट्ट व माता इलम्मा गारु थी। इनके विषय में कहा जाता है की जन्म के समय यह इतने दुर्बल व संज्ञाहीन थे कि अमृत जान पढ़ते थे, अतः मृत जानकर इन्हें पास ही वृक्ष के नीचे गड्ढे में डालकर ऊपर पत्तों से ढक दिया गया। अगले ही दिन जब परिवारजन उस स्थान से गुजरे तो दबे बालक को वही खेलते पाया तथा उसके चारों ओर अग्नि का एक मंडल बना हुआ पाया।

यह बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के प्रखर विद्वान जान पढ़ते थे। १३ वर्ष की कम आयु में इन्होंने वेद, वेदांग, पुराणों आदि का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। पिताजी के गोलोकवासी हो जाने के पश्चात यह अपने मामा जी के यहां विजयनगर आ गए। विजयनगराधीश के दरबार में इन्होंने द्वैत मत के आचार्य, व्यास तीर्थ की अध्यक्षता में अद्वैत वादियों को परास्त किया, तब इनका कनकाभिषेक भी हुआ। इन्होंने भारतवर्ष के कई स्थानों की यात्रा भी करी। इसी बीच एक दिन स्वप्न में संदेश पाकर यह गोवर्धन आ गए, वहाँ जतीपुरा के पास गोवर्धन के निर्दिष्ट, निर्जन स्थान पर इनको 'श्रीनाथजी' का श्री विग्रह प्राप्त हुआ। वही इन्होंने श्रीनाथजी का विग्रह स्थापित किया तथा यात्रा के लिए निकल गए।

इन्होंने कई ग्रंथ भी लिखे। जगतगुरु वल्लभाचार्यजी, कुछेक ऐसे महत्वपूर्ण आचार्यों में से हैं, जिन्होंने भक्ति को जन सामान्य के लिए अति सुलभ किया तथा भारतीय जनजीवन में बहुत बड़ा क्रांतिकारी परिवर्तन किया।

५२ वर्ष की आयु में अपने अंतिम समय का पूर्वानुमान होते ही आप १५८७ ज्येष्ठ कृष्ण दशमी को अपने पुराने स्थान अडैल से प्रयाग आ गए। तदोपरांत काशी गए तथा ४० दिन के उपवास के पश्चात सन् १५८७ की आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी को गंगा में प्रवेश कर जल समाधि ग्रहण करी। इस प्रकार श्री वल्लभाचार्य जी ५२ वर्ष २ माह ७ दिनों तक धरा धाम में रहे।

श्री वल्लभाचार्य जी का, विष्णु स्वामी संप्रदाय से परंपरागत संबंध भी स्थापित होता है। ऐसा प्रतीत होता है, कि विष्णु स्वामी सांप्रदायिक बालकृष्ण सेवा मार्ग का जब सरल व सुलभ मार्ग, वल्लभभाचार्य जी ने जनसाधारण के समक्ष रखा होगा तो स्वतरू ही उसे पुष्टिमार्गीय या वल्लभाचार्य संप्रदाय की संज्ञा प्राप्त हो गई होगी।

विष्णु स्वामी संप्रदाय की ही भाति, वात्सल्य भाव में सेवा, नरसिंह जयंती, अष्टयामी सेवा आदि प्रवृत्तियां पुष्टि मार्ग में भी दृष्टिगोचर होती है।

सेव्य स्वरूप

संप्रदाय में श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप की सेवा की जाती है। विग्रह रूप में विराजित 'श्री कृष्ण लला की जीवंत रूप से सेवा' की जाती है। दास भक्तों का संपूर्ण जीवन व दिनचर्या उन्हीं की सेवाओं के चारों ओर व्यतीत होता है।सभी स्वरूपों में, सर्वोपरि मान्य स्वरूप, वल्लभाचार्य जी द्वारा गोवर्धन में हुआ प्रकट हुआ **'श्रीनाथजी'** का स्वरूप है। इसके अतिरिक्त प्रमुख सेव्य स्वरूप अग्रलिखित है–

स्वरूप	स्थान
१.श्री मथुरा जी	जतीपुरा (ब्रिज)
२.श्री विट्ठल जी	नाथद्वारा (राजस्थान)
३.श्री द्वारिकाधीश जी	कांकरोली (राजस्थान)
४.श्री गोकुलनाथ जी।	गोकुल (ब्रिज)
५.श्री गोकुल चंद्रमा जी	कामवान (राजस्थान)
६.श्री बाल कृष्ण जी	सूरत (गुजरात)
७.श्री मदन मोहन जी	कामवान (राजस्थान)
८.श्री नवनीत प्रिया	नाथद्वारा (राजस्थान

संप्रदाय में नित्य सेवा व अष्टयाम सेवा का प्रावधान है। जिसमें 'कृष्ण सेवा सदा कार्यं' अर्थात कृष्ण की सेवा सदा करनी चाहिए कि मान्यता है।

पुष्टिमार्गीय संप्रदाय का विस्तारः

पुष्टिमार्गीय सेव्य स्थानो में आन्यौर व जतीपुरा के बीच का पर्वतीय भाग, जहां 'श्रीनाथजी' का स्वरूप प्रकट हुआ था, सर्वाधिक पूजनीय स्थान है। जो की मथुरा से २१ किलोमीटर पश्चिम में, गोवर्धन पर्वत पर स्थित है। परंतु सामान्यतः देखा जाए तो श्री कृष्ण की लीला भूमि होने के कारण समस्त ब्रिज ही पुष्टिमार्ग के अनुयायियों व प्रेमी भक्तों हेतु, सर्वोच्च से स्थान है।

इसी के साथ पूर्व काल में हुए आक्रमणों जैसे १७२० में मुगल बादशाह औरंगजेब द्वारा किए गए आक्रमण के कारण जब श्रीनाथजी का श्री स्वरूप, आचार्य जी के वंशजों द्वारा, नाथद्वारा राजस्थान ले जाया गया तो तभी से श्रीनाथजी की सेवा पूर्वानुरूप नाथद्वारा मैं भी की जाने लगी। इसे आज संप्रदाय का दूसरा प्रमुख सेव्य स्थान कहां जाता है। इसके अतिरिक्त कामवन, काशी, सूरत, कांकरोली सभी स्थानों में स्वरूप विराजमान है, व सेव्यरत भी है।

५२ वर्ष २ मा ७ दिन इस पृथ्वी पर विराजमान होने के पश्चात जब वल्लभाचार्य जी गोलोक वासी हो गए, तो वंशानुगत परंपरा से, उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथ जी पुष्टिमार्ग के आचार्य हुए।

१५६८ में जन्मे श्री गोपीनाथजी की दीक्षा अपने पिताजी की ही देखरेख में हुई तथा यह भी अत्यंत प्रकांड विद्वान व धार्मिक निष्ठा वाले हुए। परंतु अल्पायु में ही संवत १५६६ में इनका निधन हो गया। इसके बाद उनके पुत्र श्री पुरुषोत्तम जी आचार्य गद्दी पर विराजमान हुए परंतु यह भी अल्पायु में १६०६ में परलोक गमन कर गए।

श्री पुरुषोत्तम के निधन के पश्चात उनके काका श्री वल्लभाचार्य जी के द्वितीय पुत्र गोस्वामी विट्ठल नाथ जी आचार्य पद पर आसीन हुए।

गोस्वामी विट्ठल नाथ जी

संप्रदाय में आपको श्री गोसाई जी के नाम से जाना जाता है। आपका जन्म संवत् १५७२ (सन्१५१५) की पौष कृष्णा नवमी, शुक्रवार को काशी के समीप चरणाद (चुन्नट) नामक स्थान में हुआ। शिक्षा–दीक्षा काशी में हुई। आप आरंभ से ही बड़े मेधावी और प्रभावशाली रहे १५ वर्ष की आयु में ही अपने वेद, वेदांग, दर्शन तथा भागवत, पुराण आदि का सांगोपांग अध्ययन कर लिया था। आपने अपनी योग्यता व सूझबूझ से पुष्टिमार्ग का व्यापक प्रचार किया तथा संप्रदाय के वैभव को अतुल्य योगदान दिया। साहित्य,संगीत और कला, सभी में रत तथा अपने चतुर्दिक व्यक्तित्व से आपने संप्रदाय को सांस्कृतिक शिखर पर पहुंचा दिया। पुष्टिमार्ग सेवा के महत्वपूर्ण अंग 'राग अथवा कीर्तन' को सुव्यवस्थित और सुचारू रूप देने के लिए ही, गोस्वामी विट्ठल नाथ जी ने अष्टछाप की रचना करी। वार्ता साहित्य तथा पुष्टि संप्रदाय के ऐतिहासिक उल्लेखों से इस बात की पुष्टि होती है कि मुगल सम्राट अकबर श्री विट्ठल नाथ जी का बड़ा सम्मान करता था तथा उसने विपुल मात्रा में राजकीय सहायता भी दी थी। सम्राट के अतिरिक्त सेनानायक मुरीद खान और उच्च पदस्थ अली अकबर की पुत्री हमीदा बानो बेगम ने भी फरमानों द्वारा श्री विट्ठल नाथ जी को सहायता दी थी।

गोस्वामी श्री विट्ठल नाथ जी ने अनेक यात्राएं करी, इन यात्राओं के माध्यम से वह पुष्टिमार्ग का प्रचार करते थे तथा अनेक व्यक्तियों को पुष्टि मार्ग में दीक्षा देते थे। गोसाई जी का प्रथम विवाह १५३३ ईस्वी में श्री रुक्मिणी देवी जी के साथ हुआ।

इनसे इन्हें ६ पुत्र–
१.श्री गिरधर जी, २.श्री गोविंद राय जी, ३.श्री बालकृष्ण जी, ४.श्री गोकुल नाथ जी, ५.श्री रघुनाथ जी, ६.श्री यदुनाथ जी और चार पुत्रियां प्राप्त हुई।

रुक्मणी जी के नित्य लीला में प्रवेश के पश्चात गोसाई जी का १५६८ ईस्वी में श्री पद्मावती जी के साथ दूसरा विवाह हुआ, उनसे उन्हें एक पुत्र घनश्याम जी प्राप्त हुए।

संवत १६०० में गुसाई जी ने गुजरात सौराष्ट्र की यात्रा करी, तत्पश्चात संवत १६१० में मगध प्रदेश की यात्रा, संवत १६१४ में गौड प्रदेश की यात्रा, संवत १६१६ में जगदीशपुरी की यात्रा और संवत १६३४ में पुनः गौड़ प्रदेश की यात्रा करी।१० फरवरी १५८६ ई. व विक्रम संवत १६४२ को गिरिराज गोवर्धन में आपने अपना शरीर त्याग दिया,वा गौलोक को प्रस्थान कर गए।

जब विट्ठल नाथ जी को अपने अंतिम समय का आभास हुआ तो वंशानुगत परंपरा के चलते उन्होंने अपने ७ पुत्रों को, ७ सेव्य स्वरूप के साथ अपनी संपत्ति हस्तांतरित कर दी। उनके पुत्रों ने सभी स्वरूपों की पृथक पृथक रूप से सेवा प्रारंभ करी।

इन्ही ७ सेव्य स्वरूपों के विराजमान स्थान आज पुष्टिमार्गी सप्त ग्रहोंध्घरानो के रूप में अस्तित्व में आए हैं।

अग्रलिखित तालिका में सातों सेव्य स्वरूप, सात पुत्रों और उनके ७ स्थानों का वर्णन दिया गया है–

गृह	सेव्या स्वरूप	पुत्रो के नाम	स्थान
प्रथम	श्री नवनीत प्रिया जी श्रीनाथजी श्री मथुरारेश जी	श्री गिरधर जी – –	नाथद्वारा नाथद्वारा जतिपुरा
द्वितीय	श्री विट्ठलनाथ श्री	श्री गोविन्द रायजी	नाथद्वारा
तृतीय	द्वारिकाधीश जी	श्री बालकृष्ण जी श्री	कांकरोली
चतुर्थ	श्री गोकुलनाथ जी	गोकुलनाथ जी	गोकुल
पंचम	गोकुल चंद्रमा जी	श्री रघुनाथ जी	कामवन
षष्ठम	श्री बालकृष्ण	श्री यदुनाथ जी	गुजरात
सप्तम	श्री मदन मोहन	श्री घनश्याम जी	कामवन

पुष्टिमार्ग के सर्वप्रथम उपास्य स्वरूप 'श्रीनाथजी' व गुसाई जी के निजी सेव्य स्वरूप 'श्री नवनीत प्रिया' जी की सेवा परंपरा अनुसार गुसाई जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गिरधर जी के घर को मिली। यह घराना आज 'टिकैत' घराना कहलाया जाता है।

पुष्टिमार्गीय नवनीधी स्वरूप, गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के समय के बाद तक भी यह सेव्य स्वरूप ब्रिज में ही विराजमान थे, परंतु औरंगजेब के १७२० के धार्मिक विद्रोह के कारण ,सुरक्षार्थ, सभी स्वरूप हिंदू राजाओं के यहां ले जाए गए।

कुछ स्वरूपों को बाद में ब्रिजधाम में ले आया गया परंतु अधिकांश अभी भी ब्रिज के बाहर ही विराजमान है ।

सात औरस पुत्रों के अतिरिक्त विट्ठलनाथ जी के एक पोषित पुत्र भी थे। वैसे तो इनका नाम तुलसीदास था परंतु इनको 'आठवां लालजी' कहकर भी संबोधित किया जाता था।

अपने पुत्रों की ही भांति गुसाई जी ने लालजी का भी पालन–पोषण किया तथा उनको, श्री गोपीनाथ जी का स्वरूप सेवा करने के लिए प्रदान किया।

लालजी को गोस्वामीजी द्वारा सिंधु देश के लिए भेजे जाने के भी प्रमाण मिलते हैं, उनके वंशज आज भी सिंधु निवासियों को पुष्टि मार्ग की दीक्षा देते हैं।

इस घराने के सांप्रदायिक साहित्य के अनुसार तुलसीदास जी, उपनाम लालजी का समय संवत १६७५ तक ज्ञात होता है। वंशानुक्रम में आज गोस्वामी विट्ठल दास जी के सात पुत्रों में से प्रथम व षष्ठम् पुत्र के ही वंश चल रहे हैं, शेष सभी परिवारों ने उक्त दोनों परिवारों से बच्चे गोद लिए हैं।

संदर्भ–सूची

1. अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय, डॉ. दीनदयाल गुप्तहिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ,1970
2. हवेली संगीत, डॉ. हरीकृष्ण गांधीसंगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली, 1993
3. Pushtimarg and the Vallabh Sampradaya, Dr. Shrinand Kumar, Abhinav Publications1988
4. The Heritage of Pushtimarg, Shyam Manohar Goswami, Vallabh Vidyanagar Publications1999
5. संगीत रत्नाकर, शारंगदेव ,
6. हिन्दुस्तानी संगीत पद्धतिपं., विष्णु नारायण भातखण्डे, संगीत कार्यालय, हा थरस विभिन्न संस्करण
7. क्रमिक पुस्तक मालिका (भाग 1–6) , पं. विष्णु नारायण भातखण डे, संगीत कार्यालय, हाथरस
8. भारतीय संगीत का इतिहास, डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे, चौ खम्बा प्रकाशन, विभिन्न संस्करण
9. History of Indian MusicSwami Prajnanananda Firma KLM, Kolkata, 1973
10. Indian MusicThakur Jaidev SinghSangeet Natak Akademi,1993